Need for geo-tagging of trees in Uttar Pradesh-Laid

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज) : कश्मीर के प्रतीक चिनार के पेड़ (प्लेटानस ओरिएंटालिस) शहरीकरण और बीमारियों के कारण तेजी से कम हो रहे हैं । पिछले 50 वर्षों में इन पेड़ों की संख्या आधी रह गई है । इनके संरक्षण के लिए जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने जियो-टैगिंग और क्यूआर कोडिंग जैसे कदम उठाए हैं, जिसके तहत 17,000 से अधिक चिनार पेड़ों को चिन्हित किया गया है । इन पेड़ों की निगरानी और संरक्षण के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है, लेकिन वनीकरण, रोग प्रबंधन और व्यापक जनभागीदारी के प्रयास भी आवश्यक हैं । उत्तर प्रदेश के शीशम (डल्बर्गिया सिस्सू), साल (शोरिया रोबस्टा) और सक्कू (?सौ खड़े, सौ पड़े और सौ सड़े?) जैसे पेड़ भी पर्यावरणीय और सामाजिक सुरक्षा में अहम योगदान देते हैं । पर्यावरणीय लाभ: ये पेड़ भूजल संरक्षण, कार्बन अवशोषण, और मिट्टी की उर्वरता, लकड़ी, चारा, और औषधीय उपयोग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सहारा तथा वनों पर आश्रित समुदायों की आजीविका और रोजगार इन पेड़ों से जुड़ी है । अतः मेरा सरकार से निवेदन हैं कि उत्तर- प्रदेश मे पेड़ों के लिए जियो-टैगिंग और निगरानी, रोग प्रतिरोधी पौधों की नर्सरी, विशेष संरक्षण नीति, जन भागीदारी को सुनिश्चित किया जाना आवश्यक हैं । ये कदम पर्यावरणीय संतुलन और समाज की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे ।